फिराक गोरखपुरी

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» फिराक गोरखपुरी: कवि परिचय

प्रश्न 1 (आसान). फिराक गोरखपुरी का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर – गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

प्रश्न 2 (आसान). फिराक साहब की कोई एक प्रमुख कृति का नाम बताओ।
उत्तर – गुले-नग़मा

प्रश्न 3 (मध्यम). उन्होंने किस आंदोलन में भाग लेने के लिए डिप्टी कलेक्टर का पद छोड़ा था?
उत्तर – स्वराज आंदोलन या स्वतंत्रता आंदोलन

प्रश्न 4 (कठिन). उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार किस कृति के लिए मिला था?
उत्तर – गुले-नग़मा

» फिराक की शायरी की विशेषताएँ

प्रश्न 5 (आसान). फिराक की शायरी की कोई एक विशेषता बताइए।
उत्तर – उनकी शायरी में लोकजीवन का समावेश होता है।

प्रश्न 6 (आसान). फिराक ने किन भाषाओं का मेल अपनी शायरी में किया है?
उत्तर – हिंदी, उर्दू और लोकभाषा।

प्रश्न 7 (मध्यम). फिराक की शायरी में 'सामाजिक दुख-दर्द की व्यक्तिगत अनुभूति' से क्या आशय है?
उत्तर – इसका मतलब है कि समाज में जो कष्ट या समस्याएँ हैं, उन्हें फिराक जी सिर्फ़ बाहरी तौर पर नहीं बताते, बल्कि अपनी निजी भावनाओं और अनुभवों से जोड़कर दिखाते हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). फिराक ने परंपरागत भावबोध और शब्द-भंडार का उपयोग करते हुए भी अपनी शायरी को नया कैसे बनाया?
उत्तर – उन्होंने पुराने शब्दों और भावनाओं को नए विषयों जैसे सामाजिक दुख-दर्द, प्रकृति का सौंदर्य, और भारतीय संस्कृति से जोड़ा। साथ ही, उन्होंने आम आदमी की भाषा और संवाद शैली का प्रयोग किया, जिससे उनकी शायरी आमजन तक पहुँच पाई और समकालीन लगने लगी।

» उर्दू शायरी में लोकभाषा और मुहावरेदारी

प्रश्न 9 (आसान). फिराक की रुबाइयों में 'रस की पुतली' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है?
उत्तर – बहन के लिए, खासकर रक्षाबंधन के प्रसंग में।

प्रश्न 10 (आसान). उर्दू शायरी की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
उत्तर – लाक्षणिक प्रयोग और मुहावरेदारी।

प्रश्न 11 (मध्यम). फिराक ने अपनी शायरी को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए किस शैली का उपयोग किया?
उत्तर – उन्होंने लोकभाषा और चुस्त मुहावरेदारी का इस्तेमाल किया, जिससे उनकी शायरी सीधी संवाद शैली में लगती थी।

प्रश्न 12 (कठिन). 'घर लौट बहुत रोए माँ-बाप अकेले में, मिट्टी के खिलौने भी सस्ते न थे मेले में' – इस पंक्ति में 'मिट्टी के खिलौने' किस बात का प्रतीक हैं और यह फिराक की किस खासियत को दर्शाता है?
उत्तर – 'मिट्टी के खिलौने' यहाँ बचपन की छोटी-छोटी ख्वाहिशों और गरीब परिवारों की आर्थिक तंगी का प्रतीक हैं, जहाँ बच्चों की मामूली इच्छाएँ भी पूरी कर पाना मुश्किल होता है। यह फिराक की लोकजीवन और आम आदमी के दुख-दर्द को मुहावरेदार शैली में व्यक्त करने की खासियत को दर्शाता है।

» रुबाई छंद का परिचय

प्रश्न 13 (आसान). रुबाई में कितनी पंक्तियाँ होती हैं?
उत्तर – चार

प्रश्न 14 (आसान). रुबाई की कौन सी पंक्ति तुकबंदी में शामिल नहीं होती?
उत्तर – तीसरी

प्रश्न 15 (मध्यम). रुबाई छंद उर्दू और फारसी के अलावा और किस भाषा से जुड़ा है?
उत्तर – किसी और भाषा से नहीं, यह मुख्यतः उर्दू और फारसी का छंद है।

प्रश्न 16 (कठिन). फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों में कौन सी भाषा का घरेलू रूप दिखता है?
उत्तर – हिंदी का घरेलू रूप।

» वात्सल्य रस की रुबाइयाँ: बच्चे और माँ का प्रेम

प्रश्न 17 (आसान). फिराक की रुबाइयों में 'वात्सल्य रस' का क्या अर्थ है?
उत्तर – माँ-बाप का अपने बच्चों के प्रति प्रेम और स्नेह।

प्रश्न 18 (आसान). 'चाँद के टुकड़े को खड़ी' पंक्ति में 'चाँद का टुकड़ा' किसे कहा गया है?
उत्तर – माँ के छोटे बच्चे को।

प्रश्न 19 (मध्यम). बच्चे की किस ज़िद को पूरा करने के लिए माँ उसे आईने में चाँद दिखाती है?
उत्तर – जब बच्चा असली चाँद को लेने की ज़िद करता है, तो माँ उसे बहलाने के लिए आईने में चाँद की परछाईं दिखाती है।

प्रश्न 20 (कठिन). फिराक की रुबाइयों में दीवाली और रक्षाबंधन के दृश्यों का वर्णन माँ-बच्चे के प्रेम को कैसे दर्शाता है?
उत्तर – दीवाली में बच्चे के घरौंदे में दीये जलाना और रक्षाबंधन पर भाई की कलाई पर राखी बाँधना – ये दोनों दृश्य बचपन की खुशियाँ और घरेलू रिश्तों की मिठास दिखाते हैं, जो वात्सल्य के दायरे में ही आते हैं, जहाँ माँ-बाप बच्चों की खुशियों का ध्यान रखते हैं और वे त्योहार मिलकर मनाते हैं।

» रक्षाबंधन की रुबाइयाँ: भाई-बहन का अटूट बंधन

प्रश्न 21 (आसान). फिराक गोरखपुरी की रक्षाबंधन की रुबाई किस रिश्ते पर केंद्रित है?
उत्तर – भाई-बहन के रिश्ते पर।

प्रश्न 22 (आसान). रुबाई में 'रस की पुतली' किसे कहा गया है?
उत्तर – बहन को, जो प्यार और मिठास से भरी है।

प्रश्न 23 (मध्यम). कवि ने सावन की घटा, बिजली और राखी के बंधन में क्या समानता दिखाई है?
उत्तर – कवि ने इन तीनों में एक अटूट संबंध दिखाया है। जैसे सावन की घटा से बिजली का गहरा संबंध है, वैसे ही भाई-बहन का रिश्ता भी अटूट और चमक से भरा है।

प्रश्न 24 (कठिन). रक्षाबंधन की रुबाई में बहन के राखी बांधने के दृश्य का वर्णन फिराक गोरखपुरी ने किस तरह किया है, जिससे यह सिर्फ एक त्योहार न लगकर एक भावनात्मक पल बन जाता है?
उत्तर – फिराक गोरखपुरी ने बहन को 'रस की पुतली' कहा है, जो उसके प्यार भरे स्वभाव को दर्शाता है। वह सुबह हल्की-हल्की घटा छाई होने पर, जब 'बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे' वाली राखी भाई के बाँधती है, तो यह केवल धागा बांधना नहीं होता, बल्कि प्रेम, विश्वास और रक्षा के भाव को बांधना होता है। यह वर्णन केवल बाहरी चमक नहीं, बल्कि अंदरूनी पवित्र भावना को दर्शाता है, जिससे यह पल बहुत भावनात्मक बन जाता है।

» हिंदी, उर्दू और लोकभाषा का संगम

प्रश्न 25 (आसान). फिराक की कविता में किस चीज़ का संगम देखने को मिलता है?
उत्तर – हिंदी, उर्दू और लोकभाषा का।

प्रश्न 26 (आसान). गांधी जी किस भाषा को बढ़ावा देना चाहते थे, जिसमें ये तीनों भाषाएँ मिलती हों?
उत्तर – गांधी जी 'हिंदुस्तानी' भाषा को बढ़ावा देना चाहते थे।

प्रश्न 27 (मध्यम). फिराक की रुबाइयों में से कोई एक उदाहरण दीजिए जो हिंदी और उर्दू के मेल को दर्शाता हो।
उत्तर – 'रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक' - यहाँ 'रूपवती' और 'नर्म' हिंदी/उर्दू का मेल दिखाते हैं।

प्रश्न 28 (कठिन). आपको क्यों लगता है कि फिराक गोरखपुरी ने अपनी शायरी में केवल एक भाषा का प्रयोग न करके इन तीनों भाषाओं का संगम किया होगा?
उत्तर – फिराक जी चाहते होंगे कि उनकी कविता ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचे, चाहे वे किसी भी भाषा या क्षेत्र से हों। तीनों भाषाओं के मेल से उनकी कविता ज़्यादा समृद्ध और स्वाभाविक लगती होगी।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. फिराक गोरखपुरी का मूल नाम क्या था और उन्हें किन प्रमुख पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

› सबसे पहले, हमें यह जानना होगा कि कवि का असली या मूल नाम क्या था।

› फिर, हमें उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए मिले सम्मानों को याद करना होगा।

› फिराक गोरखपुरी का मूल नाम रघुपति सहाय था।

› उन्हें 'गुले-नग़मा' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड से नवाजा गया था।

उत्तर – फिराक गोरखपुरी का मूल नाम 'रघुपति सहाय' था। उन्हें गुले-नग़मा के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड से सम्मानित किया गया था।

उदाहरण 2. फिराक गोरखपुरी की शायरी में 'लोकजीवन का समावेश' कैसे दिखाई देता है? उदाहरण सहित समझाइए।

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'लोकजीवन' का मतलब है आम लोगों की ज़िंदगी, उनके रीति-रिवाज, उनके रोज़मर्रा के अनुभव।

› दूसरा कदम: अब फिराक जी की रुबाइयों में ऐसे उदाहरण ढूँढेंगे जहाँ आम जीवन की झलक मिलती हो।

› तीसरा कदम: उनकी एक रुबाई है, 'आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी, हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी'।

› चौथा कदम: यहाँ माँ अपने बच्चे को गोद में लेकर चाँद के टुकड़े (बच्चे को ही चाँद का टुकड़ा कहा गया है) की तरह प्यार से झुला रही है। ये दृश्य किसी भी भारतीय घर में देखा जा सकता है।

› पाँचवाँ कदम: दूसरा उदाहरण, 'मि◌ी के खिलौने भी सस्ते न थे मेले में'। यह बताता है कि बच्चों के लिए मेला कितना खास होता है, और माँ-बाप उनकी छोटी-छोटी ख्वाहिशें कैसे पूरी करते हैं।

› छठा कदम: इन उदाहरणों से साफ है कि फिराक जी ने अपनी शायरी में भारतीय लोकजीवन की छोटी-छोटी, प्यारी और सच्ची बातों को जगह दी है।

› सातवाँ कदम: इस तरह वो सिर्फ़ बड़े-बड़े आदर्श नहीं, बल्कि आम आदमी के सुख-दुख और खुशियों को भी अपनी शायरी का हिस्सा बनाते हैं।

उत्तर – फिराक गोरखपुरी की शायरी में लोकजीवन का समावेश बच्चे और माँ के रिश्ते, त्योहारों (जैसे दिवाली, रक्षाबंधन), और मेले जैसे आम अनुभवों के चित्रण से दिखाई देता है, जो भारतीय घरों की सहज, भावनात्मक और सांस्कृतिक झलक पेश करता है।

उदाहरण 3. फिराक गोरखपुरी की रुबाई 'आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी' में 'चाँद के टुकड़े' का क्या अर्थ है और यह किस लाक्षणिक प्रयोग का उदाहरण है?

› पहचानो कि यहाँ 'चाँद का टुकड़ा' किसी वास्तविक चाँद के टुकड़े की बात नहीं कर रहा।

› सोचो कि छोटे बच्चे की खूबसूरती और मासूमियत को अक्सर किससे तुलना की जाती है, खासकर जब माँ उसे प्यार करती है।

› समझो कि यह एक विशेषण या रूपक के तौर पर इस्तेमाल हुआ है, जहाँ बच्चे को चाँद जितना ही खूबसूरत और प्यारा बताया गया है।

› यह लाक्षणिक प्रयोग है क्योंकि यहाँ शब्दों का सीधा अर्थ नहीं, बल्कि उनसे जुड़ा भावार्थ (implication) ग्रहण किया जा रहा है।

उत्तर – 'चाँद के टुकड़े' का अर्थ है 'बहुत प्यारा, सुंदर और मासूम बच्चा'। यह लाक्षणिक प्रयोग का उदाहरण है क्योंकि यहाँ सीधे अर्थ के बजाय बच्चे की सुंदरता को चाँद से तुलना करके व्यक्त किया गया है। यह फिराक के लोकभाषा और मुहावरेदारी का बेहतरीन उदाहरण है, जिससे आम भारतीय माँ के प्यार और बच्चे की सुंदरता का जीवंत चित्रण होता है।

उदाहरण 4. यह कवितांश रुबाई है या नहीं, पहचानें: 'आज लोरी सुनाकर मां ने सुलाया, चांद को गोदी में आकर बिठाया। झूलती रही रात भर ममता की छाया, सुबह उठा तो चेहरा मेरा मुस्काया।'

› पहला चरण: पंक्तियों की संख्या गिनो। यहाँ 4 पंक्तियाँ हैं।

› दूसरा चरण: पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति के अंतिम शब्दों की तुकबंदी देखो।

› तीसरा चरण: पहली पंक्ति का अंत 'सुलाया', दूसरी का 'बिठाया', और चौथी का 'मुस्काया'। तीनों में 'आया' की ध्वनि मिल रही है।

› चौथा चरण: तीसरी पंक्ति का अंत 'छाया' है, जो बाकी से स्वतंत्र नहीं है। अरे, रुकिए! यहाँ तो तीसरी पंक्ति भी तुक मिला रही है। इसका मतलब है कि यह 'रुबाई' के मूल नियम से थोड़ा अलग हो गया।

› सही पहचान: चूंकि तीसरी पंक्ति भी तुक मिला रही है, यह रुबाई के 'स्वच्छंद' होने के नियम का पालन नहीं कर रही है। यह रुबाई की तरह लग रही है लेकिन 'पूरी तरह से' रुबाई नहीं है।

उत्तर – यह कवितांश 'पूरी तरह से रुबाई' नहीं है क्योंकि इसकी तीसरी पंक्ति भी तुक मिला रही है, जबकि रुबाई में तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

उदाहरण 5. फिराक की रुबाइयों में माँ अपने बच्चे को 'गोद भरी' क्यों बुलाती है, और इससे किस भाव का पता चलता है?

› पहले रुबाई की पहली पंक्ति देखो: 'आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी, हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी'।

› यहाँ 'चाँद का टुकड़ा' बच्चे के लिए इस्तेमाल हुआ है, जो बहुत प्यारा है।

› 'गोद-भरी' का मतलब है माँ की गोद में बच्चा है, और माँ का मन उस बच्चे से भरा हुआ है, यानी वह बच्चे से बहुत प्यार करती है।

› यह दिखाता है कि माँ अपने बच्चे से कितना गहरा प्रेम और ममता रखती है। यह वात्सल्य रस का सबसे सुंदर उदाहरण है।

उत्तर – माँ अपने बच्चे को 'गोद-भरी' इसलिए बुलाती है क्योंकि बच्चा उसकी गोद में है और माँ का मन बच्चे के प्यार से पूरी तरह भरा हुआ है। इससे माँ के निश्छल वात्सल्य और ममता का भाव पता चलता है।

उदाहरण 6. फिराक गोरखपुरी की रक्षाबंधन वाली रुबाई में 'बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे' पंक्ति का क्या भाव है?

› सबसे पहले हमें रुबाई को ध्यान से पढ़ना होगा और समझना होगा कि कवि राखी के संदर्भ में क्या कह रहा है।

› यहां 'लच्छे' शब्द राखी के धागों या उसकी चमक को दर्शाता है।

› बिजली की चमक बहुत तेज़, आकर्षक और क्षण भर में ध्यान खींचने वाली होती है।

› कवि राखी के धागों की चमक को बिजली की चमक जैसा बताकर यह भाव व्यक्त कर रहे हैं कि राखी के धागे साधारण नहीं, बल्कि बहुत सुंदर, आकर्षक और पवित्र भावनाओं से भरे हैं, जिनमें भाई-बहन के प्यार की चमक है।

› यह चमक केवल रंग-रूप की नहीं, बल्कि विश्वास और प्रेम के गहरे संबंध की है, जो त्योहार की सुबह को और भी ज़्यादा खास बना देती है।

उत्तर – यह पंक्ति राखी के धागों की सुंदरता, चमक और उनमें निहित भाई-बहन के अटूट प्रेम तथा विश्वास के भाव को व्यक्त करती है।

उदाहरण 7. फिराक गोरखपुरी की 'रुबाइयाँ' कविता में से ऐसे तीन शब्द छाँटिए जिनमें हिंदी, उर्दू और लोकभाषा का मिश्रण दिखता हो।

› पहला शब्द देखते हैं: 'गोद-भरी'। यह स्पष्ट रूप से हिंदी का शब्द है, जो माँ की गोद को दर्शाता है।

› दूसरा शब्द देखते हैं: 'गेसुओं' में 'कंघी करके'। यहाँ 'गेसुओं' उर्दू का शब्द है, जिसका अर्थ है बाल। और 'कंघी करके' हिंदी का है।

› तीसरा शब्द देखते हैं: 'लोका देती है'। यह शब्द पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार की लोकभाषा का है, जिसका मतलब है उछालना या प्यार से हिलाना।

› तो देखिए, एक ही रुबाई में हिंदी ('गोद-भरी', 'कंघी करके'), उर्दू ('गेसुओं') और लोकभाषा ('लोका देती है') के शब्द कितने सुंदर तरीके से एक साथ आ गए।

उत्तर – रुबाइयों में हिंदी (जैसे 'गोद-भरी', 'कंघी करके'), उर्दू (जैसे 'गेसुओं') और लोकभाषा (जैसे 'लोका देती है') के शब्दों का संगम है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उनके मूल नाम, जन्म स्थान, और 'गुले-नग़मा' कृति के लिए मिले पुरस्कारों को खास तौर पर याद रखना, ये बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछे जाते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर फिराक की शायरी की विशेषताओं या उनकी रुबाइयों की विशेषताओं पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। आपको कम से कम 3-4 मुख्य विशेषताएँ याद रखनी चाहिए और उन्हें उदाहरणों के साथ समझाने का अभ्यास करना चाहिए।

• फिराक की रुबाइयों में प्रयुक्त मुहावरों और लाक्षणिक प्रयोगों को पहचानना और उनका अर्थ स्पष्ट करना अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछा जाता है।

• रुबाई छंद पर अक्सर उसकी परिभाषा और तुकबंदी पैटर्न पर प्रश्न आते हैं, खासकर बोर्ड परीक्षा में। एक उदाहरण देकर इसकी पहचान स्पष्ट करना सीख लो।

• यह भाग अक्सर व्याख्या और भावार्थ के लिए आता है। रुबाइयों के पीछे छिपे माँ-बच्चे के प्रेम, बचपन की कल्पनाओं और घरेलू दृश्यों का वर्णन ध्यान से करें।

एक नज़र में रिवीज़न

› फिराक गोरखपुरी: रघुपति सहाय, 1896 गोरखपुर, स्वतंत्रता सेनानी, गुले-नग़मा, ज्ञानपीठ पुरस्कार।

› फिराक की शायरी: लोकजीवन, सामाजिक दुख, प्रकृति, हिंदी-उर्दू का संगम।

› फिराक: उर्दू शायरी में लोकभाषा, मुहावरेदारी; आम जन से जुड़ाव।

› रुबाई: 4 पंक्तियाँ, तुकबंदी 1, 2, 4; तीसरी स्वच्छंद।

› माँ-बच्चे का वात्सल्य प्रेम फिराक की रुबाइयों का मुख्य विषय।